श्रीराम रसामृत सिन्धु अन्तर्गत

'श्री अयोध्या महात्म्य'

चौ० -सुनि मुनि स्वः भूतेवर लीला । रची राम सुखधाम रसीला ॥
युवती कृपा सिद्ध या गाई । चित्रकूट रासस्थल छाई ॥
नित्या सखी लाड़ली संगा । केती बसी अवध रस रंगा ॥
मिथला निलय सुपाक स्वयंवर । लसी लाड़ली प्रगट भाव धर ॥
दोउ नृप रानी यथा पुर थपि । स्वयं चार वपु रसिकराज कपि ॥
त्रैथल धाम अष्ट सुखदाई । मिश्रत वन मधि लीला गाई ॥
रास भवन मधि नित्य विलासं । कथो यथा रवि मुकरे भासं ॥
नवलकिशोर नवल रस मागम । वरन्यौ कछुक महासुख आगम ॥
यथा पुरा सब तथा बिराजै । छके महा रस तन छवि छाजै ॥
हंस उदय रघुवंस कुमारा । अवधपुरी करि सुख पै सारा ॥
अवध महा महिमा छविछाई । निगम शारदा कहत लजाई ॥
यथा राम परतत्व परात्पर । यथा धाम गोलोक रूप धर ॥
वने मृगेषु हरिवर जैसै । द्रुम जातीनां पिप्पल तैसै ॥
अघगण भयदा पूज्य पावनी । अवधधाम सिरमौर भावनी ॥
यथा खगानां गरुड़ सपेहा । तथा पाप हर पुरी पार हा ॥
यथा नाग कुल शेष भार धर । तथा धर्म धर धाम सकल वर ॥
यथा नराणं पालक नरपति । तथालोक प्रतिपाल अवधअति ॥
यथा रणे सावंत सर्वपर । तथा राम विश्राम धाम तर ॥
वर्णानां जिमि पूज्य धरा सुर । तथा पुरीणां मान्य अवधपुर ॥
सिद्धानां जिमि कपिल वरिष्टं । यथा अयोध्या पुरी सु श्रृष्टं ॥
यथा द्रुमाणां सुर तरु दानी । सर्वस दान राम रजधानी ॥
राज्यासनेतुमान्य वज्र धर । असुभ शैलहा नाम राम घर ॥
यथा गुणनां सत्य शिरोमणि । स्वजन पाल साकेत संत धनि ॥
तत्वानां महतत्व पिता पर । शुभ कर्ता साकेत नगर बर ॥
प्रजापतीनां यथा विधाता । तथा रामपुर तीरथ ताता ॥
यथा धनीनां धुर्य धनेशा । राम सुखनि भरि अवधिविशेषा ॥

शिव सु वैष्नवानां वर जैसे। राम धाम धामनि में तैसे॥
देवानां श्रीपति पर जानो। लोकानां गोलोक प्रमानो।
जोतीनां रवि सरस प्रकासा। तथा शुभालय राम निवासा॥
मंत्रीणां वर बुद्धि सुमंता। वेदानां सुभ साम महंता॥
राज गुरूणां श्रेष्ट वशिष्ठो। शैलानां जिमि मेरु वरिष्ठो॥
यथा रसानां सुधा सुहायो। सर्वोपरि साकेत बतायो॥

दो०--परमेश्वर पर तत्व पर परधामी पर राम।
तथा पुण्य पावन परम अवध पुरी पर धाम॥

वेताल छं०--पर धाम राम निवास विसद विलास मंगल संप्रदं।
पर पावनं मुनि भावनं दुख दाहनं सुख सौम्यदं॥
सब काल सरस सुभाव सिद्धं चिन्मयं परमालयं॥
वर बोध मोद प्रकासकं पर तत्व पर सुखमा मयं॥
निज रूप गुण गण महिमहंतं स्वयं ज्योति निरंतरं॥
कृत काल लखियतु मोह माया शक्ति भिसुन्दर तरं॥
निज ज्ञान शक्तिप्रभाव थिर तं सदा स्वास्मिन्सोभित॥
निज लभ्य पूरणता युतं ललि लाल लीला लोभितम्॥
दुख द्वन्द दोष विमोचनं दुर बुद्धि नामति दुर्ल्लभं॥
निगमागमं सुभतां सुभं श्री जानकी वर वल्लभं॥
वैकुण्ठ षोडश कोटिनां नव नायकं शुभ दायकं॥
अघ हायकं मन मायकं भावीं जनानां भायकं।
पर ब्रह्म पूरणता परं सद्वित्प्रकासे संक्षमं॥
सुर सिद्ध संकर वंदनायं जगत मूलं सूक्षमम्॥
येषां गुणानां वर्णने श्रुति शेष शारद गुण लजे।
संसेविनी सेव्यं शुभं श्रीराम धाम महं भजे॥
श्रीरामसीता रंग रस की अवधि अवध सुहावनी।
नित हास रास विलास मंगल मोद विपुल बढ़ावनी॥
नव खंड तीरथ पूज्यनो नित द्वार सेवै भिक्षुका।
सब पाय निज मन वांछितं फल भये जगजन मोक्षका॥
जग जान पावनता जिती सरिता अवधि सर निर्गता।
वैराट प्रभु सिर शोभिता वैकुण्ठ वासी भिर्नुता॥

कोइ सुपच दंपति अन्य देशी एक रजनी वासिकी ॥
शुभ प्रात काले मृत्यु पाई दोऊ महल उपासकी ॥
महि वेदका बैमानका साकेत बाहिर मागता ॥
तेतत्रत्यानां पादरेणुं सीस श्रेणीभिर्नुता ॥
अपि धन्य धन्यं भाग येषां ये वसंती अत्रत्या ॥
ते पंडिता रज मंडिता एवं वदंती मंत्रिता ॥
ये अत्र जंतु पिपीलिकादिक मच्छका ममका परा ॥
पसु स्वान खर सूकर खगा साकेतवासी जलचरा ॥
तेषां सुभाग्य प्रमंम ब्रह्मा विष्णु शेष महेश्वरा ॥
नित याचका साकेत बासं भवतु नो भव मातुरा ॥

सोरठा—गुल्म लता तृण जात, अहो पुण्य तेषां बदैं ।
पदरज सेवैं गात, सियवर रसिकानां सदा ॥
जे वन चारी जीव, अवध रमैं सुख रैन दिन ।
ते नित प्यारे पीव, सुर सिहाँय तिनके सुखहिं ॥

दोहा— वीस चारि निज हिय करन, सियवर चरन लगाय ।
ते अनन्य बसिहैं निकट परानंद सुख पाय ॥
त्रै गुण त्रै वर्तनि करि पुर वैकुण्ठ कहाय ।
चक्रित ब्रह्मा बुद्धि मन, अचरज मान भुलाय ॥
तीन देव त्रैलोक्य कृति इहाँ न द्वै को जोर ।
रज तम ब्रह्मा शम्भु जुग वांछित नैन निहोर ॥

चौ०-द्रुम वल्ली वन उपवन बासी । अवध जन्म सिय राम उपासी ॥
निज फल पुष्पन ते नित सेवैं । अङ्ग परस पिय पर रस लेवैं ॥
कमला विपन देव वन एते । करत प्रमंसा निस दिन तेते ॥
सुर सुख सेवै दुर्लभ ते वन । सीतापति रस पीवै ये धन ॥
माया कृत सुरलोक विपिन सुर । मायापति पति सुखद अवधपुर ॥
कालग्रास सब लोक लोकपति काल कर्म दुख दूर अवध रति ॥
अवध वसंति ये नर नारी । सीता राम रूप अविकारी ॥
सुनि मुनि राम रूप सब कैसे । ब्रह्मा देखी वर्णों जैसे ॥
एक समय विधि हंस उडाये । सोभा निरख अवधपुर आये ॥
वाहिज वन सरयू तट राजैं । यत्र सकल वन सकुन समाजै ॥

सकुनस्याम यक राम विपिनको। गत मराल ढिग बुद्धि निपुन को॥
पूंछी को भवान्क वासी। को स्वामी के बने उपासी।
बोल्यो बिधि वाहन अभिमानी। हमरी गति दुर्लभ धर प्रानी॥
हम हंसा बिधि लोक निवासी। अज स्वामी पति भोग उपासी॥

॥ स्याम सकुनोवाच॥

हंसन के कहु लक्षण भाई। वर्ण मात्र की गुण चतुराई॥
ताल मराल लखै जल पय गति। तुम निर्णय किंकृत सुबोध मति।
कहो किमाश्रय लोक तुम्हारो। कब तै कवलौं सदा विचारो॥
नाभि कमल जनम्यो जगजान्यो कबसे अज निज नाथ बखान्यौ।
कवन भोग को मुक्ता कहिये। किं प्रमाण फल भोगी लहिये॥
कहे वाक्य निज आप विचारो। प्रति उत्तर कर बोध हमारो॥
यो साकेत सियावर धामा। बिन अधिकार न ते विश्रामा॥
जाहु भवन की शब्द उचारो। स्वेत वर्ण में छार न डारो॥
हंस स्वमति प्रतिबोध न पायो उड्यौ बिकलपति सानिध आयो॥
कही जाय पति सों खग वानी। कोपे बिधि प्रति ईश्वर मानी॥
मम वाहनवर हंस सु जाती। कहौ मान हत वायस घाती॥
चल्यौ हंसचढि विधिहत बोधा। देखि अवध विसरयो सब क्रोधा॥
तिष्ठ तटे सर करै विचारा। कुत्र गतो वायस मतवारा॥
जब नैनन सों हेरि हारि मन। रामाकार निहारि सकल जन॥
कटि निखंग धनुवान धरै कर। भूषण वर अनजान ताहुतर॥
कमल नैन वर वैन सुहाये। स्याम गात पट भूषण छाये॥
गजमणि माल विशाल भालवर। श्रीमणि तिलक सकल शोभाहर॥
क्रीट मुकट पटपीत बिराजे। वय किशोर अद्भुत छविछाजै॥

दो०--मानुष पसु खग कीट लौं जलचर भूचर भूप।
जड़ चेतन साकेत जन सकल राम के रूप॥
प्रमदा लिंग निहारि सब सीता रूप अनन्त।
प्रति प्रति मूरति अग्र अति सेवे सुर मुनि सन्त॥
सत मुख ब्रह्मा शेष शिव पुरुष काल सह शक्ति।
एक एक रघुवीर पद पूजत प्रेम भक्ति॥
ईश्वरता मद गलित बिधि देखि राम वर धाम।

विगत बोध वाहन सहित चित्रितवत इक जाम ॥
प्रभु दयाल निज दास लखि प्रेम दान हरि मान ।
उतरि हंस रघुवंश पद धरे धरे तन प्रान ॥

॥ भुजंग प्रयात छंद ॥

नतोहं रघोवंश पालं दयालं । मुधा मानिनां मान मथनं कृपालं ॥
सुधा नाम रामं कलानंत धामं । घनानीक स्यामं प्रिया अङ्ग वामम्
विभुं दुर्लभं वेद वादे न पारं । सतां सुर्लभं भाविकानां विहारं ॥
यथा भाव येषां तथा कीर्तिकारं । भजेहं सदा कौशलेशं सुसारं ॥
चिदानंद रूपं धरा भूप भूपं । परा भक्ति दत्वा नराणामनूपं ॥
रसे रोचकं रंग रासे निवासं । विलासे विलासं महा मोद रासं ॥
स्वयं मंप्रदं मंसृतीहं सुदानीं । शुभं शील संगे सुलीलाभिधानीं ॥
परं योगि ध्यानेन वाला विनोदं । भजामीममीसं निजानंद बोधम् ॥
स्वलाभेन लाभं घनाभं विदूरं । अदूरं स्वपूरं तुरीयं स्वमूलं ॥
दुरंतं नियंतं बलीनां बलेतं । भजेहं सदा जानकी केलि कंतं ॥
अहं दोष कोसौ नुतो पाद युग्मं पुनीतो त्वया नाथ नीतो स्वसद्मं ॥
प्रभो हंस व्याजेन मां दासदासं । कृतं सेवकानां विनोदे प्रकामं ॥
स्वकांता विलासे सदा ते निवासो सतां संगमे नाम लीला प्रकासे ॥
न मे देव लोके सुख नां प्रलेसं । लहंति यथा भाविकानामसेषं ॥
श्रुतं साकुनीयस्य एकस्यवादो । मया तेन वादेन दृष्टोसि साधो ॥
नत्वां तेपि जानंति मुक्ता विरक्ता । यथा ते गुणानां हि वक्ता सुवक्ता ॥
मुधा निर्गुणो निर्विकल्पो निरीहो वदंतीह गीते कुतो संप्रवाहो ॥
मुधा मानसिंधो बहंतीह लोके । सुधा सागरे किं वसंती स ओके ॥
तत्त्वं दयालो कदा मां विनीतं । करोमि स ते दास भावे पुनीतं ॥
यदि में कृपा देहि साकेत वासं । पतंगादि जीवे सुजानीय दासं ॥
वयं मोह मत्ता गुणाहीन भक्ता प्रजानाथ मानी वसी भूत सक्ता ॥
न जानामि त्वामीशमीशं परेशं परब्रह्मपूर्णं वरीषं वरेशं ॥
दयालो कृपालो प्रभो दीन बंधो हरे पाहि मां राम हे प्रेम सिंधो ॥
धरे बान मारंग संताप हारी महामोदकारी स्वरासे विहारी ॥
न यावद्गुरो ते परा भक्ति जानी । न तावत्सुखो शोकसंताप ज्ञानी ॥
न यावत्परं राम मंत्रं पठंते । न तावद् भवब्धिं सुरा के तरंते ॥

न यावद् हरे ते कथायां रसंते ।हि तावत् त्वरा स्वान तुल्या सुसंते॥
न यावद्गुरोः तावकानां प्रसंगे । अविद्या चरानां कुतः राम रंगे ॥
न यावद् प्रभो सीतया स स्वरूपे । रसंतीह धर्मे पतत्यंध कूपे ॥
न यावत्प्रभो तेनु धर्मेसु निष्ठा । नरा निश्चरा प्रेत पंथे वरिष्ठा ॥
प्रभो वायसा मानसे मां रमंते । सदा विड्का छूद्र कुंडे भ्रमंते ॥
वृथा तेपि जींवंति ये छूद्र मन्या । सिया राम रामेति गायंति धन्या ।

दोहा—नाथ यही वर माँगो जपो जानकी ईस ।
अवध पुरी वासीन को पद रज सेवों सीस ॥
अवध वसे जे नारि नर सीता राम स्वरूप ।
तिनकी पद रज तुल्यता लहै न सुर नर भूप॥
ज्ञान योग जप तप बिना अवध पुरी विश्राम ।
चार खानि भव जीवजड़ सहज लहै सियराम॥
ये रसिका नित राम रस गान श्रवन मनध्यान
चार वदन में वेद थकि तिनको करत बखान॥
मम जीवन लौं सेवहिं तिरथ त्रिभुवन माहिं ।
सत्य कहौं प्रभु पद क्रिया अवधि दरससम नाहिं॥
लख्यो मान विन चार मुख जान दास सुनि बैन।
भरे प्यार सुख सार वच बोले राजिव नैन ॥